इकाई 8 : परिवार की पुनर्रचनाएँ

8.0 उद्देश्य

8.1 परिचय

8.2 क्लासिकल सिद्धांतों की नजर में परिवार

8.2.1. बुनियादी अवधारणाएँ और पद

8.2.1. विभिन्न समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

8.3. समस्याएँ और चुनौतियाँ

8.3.1. गोद लेकर परिवार बनाना

8.3.2. सौतेला परिवार : परिवार की पुनर्परिभाषा (स्टेप फैमिली)

8.4. परिवार के अध्ययन की नई दिशाएँ

8.4.1. सांस्कृतिक सिद्धान्त : रक्त और वैवाहिक संबंधों से परे

8.4.2. नारीवादी परिप्रेक्ष्य : सत्ता और भेद–भाव

8.5. परिवार के नए रूप

8.5.1. पसंद का परिवार (मर्जी से बनाया गया परिवार)

8.5.2. लिव–इन संबंध

8.5.3. एकल माता पिता वाला परिवार

8.5.4. सरोगेसी परिवार

8.6. सारांश

8.7. बीज शब्द

8.8. संदर्भ

8.9 बोध प्रश्न

8.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- समाजशस्त्र के क्लासिकल/प्रभुत्व–प्राप्त सिद्धांतों की परिवार की समझ के बीज खासियतों के बारे में बता सकेंगे।
- केवल क्लासिकल सिद्धांत के परिप्रेक्ष्य से परिवार की समझ की समस्याओं और चुनौतियों की पड़ताल कर सकेंगे।
- सांस्कृतिक सिद्धांतकारों और नारीवादियों द्वारा की गई परिवार की आलोचना को म्संइवतंजम कर सकेंगे। समय के साथ परिवार के मायने के बदलने और उसके नातेदारी अध्ययन पर पड़े प्रभावों के बारे में बताने की स्थिति में होंगे।
- परिवार के नए रूपों की पड़ताल कर सकेंगे, जो पारंपरिक–जैविक परिवारों से भिन्न हैं।

8.1 परिचय

परिवार समाज की महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक है। यह बुनियादी और सार्वभौमिक जैविक आवश्यकताओं, देखभाल और समाजीकरण को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इसलिए समाजशास्त्र में परिवार को समाज की मौलिक/प्राथमिक संस्था कहा गया है। यद्यपि यह एक सार्वभौमिक संस्था है, फिर भी परिवार की परिभाषा में संस्कृति आधारित भिन्नताएं हैं। परिवार की कोई एक संरचना और स्वरूप नहीं है। कुछ संस्कृतियों में इसके तहत पति, पत्नी, बच्चे और अन्य नजदीकी नातेदार शामिल किए जाते हैं, तो कुछ में केवल पति, पत्नी और बच्चे। परिवार की संरचना और स्वरूप में इस तरह की भिन्नताएँ हो सकती हैं। लेकिन सबमें एक सामान्य बात यह

है कि इसके सदस्य वैवाहिक और रक्त–संबंधों के आधार पर एकीकृत होते हैं और एक ही घर में रहते हैं।

सामान्य तौर पर इतिहास के साथ न बदलने वाली स्थिर संस्था माना जाता है, जिसमें कोई बदलाव नहीं लाया जा सकता है। ऐसा माना जाता है कि यह सामाजिक जीवन का अचर रूप और चीजों के प्राकृतिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है (Mitterauer and Sieder 1982: 1)। जबकि हकीकत यह है कि परिवार के अर्थ के साथ–साथ उसकी संरचना में भी कई बदलाव होते रहे हैं। समकालीन समय में परिवार के रूप में कई व्यवस्थाएं और स्वरूप उभर कर सामने आए हैं जो पारंपरिक स्वरूपों से एक महत्वपूर्ण प्रस्थान का द्योतक हैं। कई इसे परिवार के संकट और इसके भविष्य को चुनौती देने वाले संकेत के रूप में देखते हैं। परिवार लगातार विकसित होता और अपने रूप बदलता रहा है। इन बदलावों की रोशनी में परिवार की पारंपरिक समझ पर सवाल उठाने और नए दृष्टिकोण से उसकी पड़ताल की कोशिशें की गई हैं। लेकिन इन पर चर्चा करने से पहले ये उचित होगा कि हम परिवार की पारंपरिक (क्लासिकल) समझ को जान लें।

8.2 परिवार क्या है : क्लासिकल समाजशास्त्र

"परिवार" की कोई एक स्पष्ट परिभाषा नहीं है। इसका उपयोग या तो व्यापक अर्थों में किया जाता है (एक सामान्य पूर्वज के सभी वंशज, जैसे कि "पारिवारिक वृक्ष") या संकीर्ण अर्थ में माता–पिता और बच्चों के साथ रहने वाली एक "इकाई" के रूप में। समाजशास्त्र में परिवार को एक इकाई के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसमें रक्त और वैवाहिक संबंधों से जुड़े लोग एक साथ रहते हैं। परिवार के लिए कुटुम्ब, गृह, कुल, वंश आदि जैसे विभिन्न पदों का प्रयोग किया जाता है। वामसा, परिवार को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। परिवार को "सांस्कृतिक आदर्श और पहचान का केंद्र" के रूप में देखा जाता है (कारलेकर 1998रू 1741)। पारंपरिक अर्थों में परिवार को चीजों के प्राकृतिक क्रम के रूप में देखा जाता है जो विवाह, मातृत्व–पितृत्व, और सहवास/निवास –ये तीन तत्वो के प्रतिच्छेद/मिलन विंदु पर स्थित होता है। परिवार को विशेष रूप से बच्चों और उनके जीवन की रक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा प्रदान करने वाली पहली संस्था माना जाता है। इसे

पालन–पोषण और भावनात्मक बंधन के एक प्रमुख स्रोत के रूप में भी देखा जाता है। इस तरह की अवधारणाएं परिवार और उसके कार्यों के विवरण के अनुरूप हैं। इसलिए, क्लासिकल सिद्धांतों में परिवार को इन तीन तत्वों के संयोजन के रूप में समझा गया हैरू विवाह, पितृत्व–मातृत्व और निवास। परिवार की प्रचलित समझ में जैविक कारक को सर्वोपरि समझा जाता है। एक विषमलैंगिक वैवाहिक घर, परिवार के गठन के लिए मूलभूत माना जाता है।

8.2.1. बुनियादी संकल्पनाएँ और परिभाषा

ऐसी कई अवधारणाएँ हैं जिन्हें अक्सर परिवार का पर्यायवाची माना जाता है लेकिन समाजशास्त्र में उनके बीच स्पष्ट अंतर किया जाता है। इसके अलावा, परिवार की कोई एक परिभाषा नहीं है। दरअसल, परिवार को परिभाषित करने के दृष्टिकोण और उद्देश्य पर परिभाषा निर्भर करती है। आइए इस हिस्से में हम परिवार की समझ के लिए बुनियदी अवधारणाओं और परिभाषाओं पर एक अंजर डालें।

8.2.1.1. घर

एक घर को 'व्यक्तियों के ऐसे समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो एक साथ एक ही जगह रहते हैं और अपनी–अपनी आमदनी को एकत्रित और साझा करते हैं। जिसकी पुष्टि उनके नियमित रूप से साथ भोजन करने अथवा खाना पकाने के साझे बर्तन से होती है' (स्कॉट और मार्शल, 2005)। दूसरे शब्दों में, घर निवास की बुनियादी इकाई होता है जहाँ आर्थिक उत्पादन, उपभोग, उत्तराधिकार, बच्चों का पालन–पोषण और आसरे का आयोजन और संचालन किया जाता है। घर (घर) आवासीय और घरेलू इकाई है जिसमें एक या एक से अधिक व्यक्ति एक ही छत के नीचे रहते हैं और एक ही रसोई (चूल्हा/चूल्हा) में पका हुआ खाना खाते हैं।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार यह जरूरी नहीं कि परिवार को परिभाषित करने में घर हमेशा एक अनिवार्य तत्व हो ही। लोग एक परिवार का सदस्य होने के बावजूद एक साथ घर में नहीं भी रह रहे हो सकते हैं। भारतीय संदर्भ को ध्यान में रखते हुए ए. एम. शाह (1968 : 129) कहते हैं कि दो भाई और उनके बच्चे

अलग–अलग घरों में रह सकते हैं, लेकिन वे कई तरह के रिश्तों से बंधे हो सकते हैं। वे आर्थिक गतिविधियों में सहयोग कर सकते हैं, संपत्ति साझी रख सकते हैं, कई अवसरों पर एक–दूसरे की मदद कर सकते हैं तथा त्योहारों, अनुष्ठानों और समारोहों में इकट्ठे शिरकत कर सकते हैं। यह सामान्य बात है, जो घर और परिवार के बीच अंतर के महत्व पर प्रकाश डालती है। इस प्रकार, दो या दो से अधिक घर अलग होने के बावजूद एक ही परिवार का हिस्सा हो सकते हैं (वही)

8.2.1.2. परिवार और घर के बीच अंतर

परिवार नातेदारी के सिद्धांतों पर आधारित होता है जिसके सदस्य आमतौर पर एक समान निवास साझा करते हैं। वे एक घर में रहते हैं। इस आवासीय इकाई को गृहस्थी कहते हैं। घर के सदस्य परस्पर संबंधों से जुड़े होते है। ये संबंध सदस्यों के लिए अपेक्षित भूमिकाओं और तदनुसार परिवार में उनकी जगह/स्थिति से जुड़े होते हैं। परिवार एक सहभोज और सह–निवासी समूह/इकाई है। ए. एम. शाह के अनुसार, परिवार और घर के बीच का अंतर, परिजनों और और निवास के नियमों पर आधारित होते हैं।

घर परिवार का विस्तार है। परिवार एक घर हो सकता है लेकिन घर को परिवार होने की आवश्यकता नहीं है। लोगों का एक समूह एक साथ रह सकता है, भले उनके बीच कोई नातेदारी संबंध न हो। उदाहरण के लिए फ्लैट मेट (जैसे छात्र), अपनी इच्छा से साथ रहने वाले लोग, प्रवासी श्रमिकों का बहुसदस्यीय घर। एक परिवार में न केवल घर होता है बल्कि अक्सर परिवार दो या दो से अधिक घरों का विस्तार होता है, जिसके सदस्य अलग–अलग रह रहे हो सकते हैं, फिर भी एक ही परिवार से संबंधित हो सकते हैं तथा उनके बीच पारिवारिक बंधन और जिम्मेदारियाँ हो सकती हैं। परिवार एक कार्यात्मक इकाई तो है है, लेकिन उससे भी बढ़कर वह एक वैचारिक और भावनात्मक इकाई। जबकि घर को एक कार्यात्मक इकाई के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

भारतीय सामाजिक संरचना को समझने के लिए 'परिवार' की बजाय 'घर' को विश्लेषण की इकाई के रूप में लेना अधिक उपयुक्त है। शाह के अनुसार परिवार '...

पिता पक्ष से संबंधित पुरुषों, उनकी पत्नियों और अविवाहित बहनों और बेटियों के घरों का एक समूह है' (शाह, 1976, ओबेरॉय, 1993, पृष्ठ 420)। इसलिए अध्ययन का उचित उद्देश्य परिवार की बजाय घरेलू आयाम होना चाहिए (ओबेरॉय, 2001, पृष्ठ.15)। परिवार और घर के बीच का अंतर हमें भारत में परिवार में हो रहे परिवर्तनों को उनकी संरचना के संदर्भ में समझने में मदद करता है।

8.2.1.3. घरेलू समूह

घरेलू समूहों को एक साथ रहने वाले और घरेलू जीवन की गतिविधियों को साझा करने वाले लोगों के समूह के रूप में वर्णित किया जा सकता है। इसे अक्सर घर के पर्यायवाची के रूप में प्रयोग किया जाता है, जहां कई परिवार कई क्षेत्रों में फैले हुए हैं लेकिन खुद को एक नातेदारी की एक इकाई मानते हैं। घरेलू समूह मूल रूप से संसाधनधारक और उत्पादन इकाई हैं। वे एक साथ रह रहे हैं (और आमतौर पर भोजन कर रहे हैं), और विशेष रूप से पारिवारिक संपत्ति पर समूहिक नियंत्रण कर रहे हैं। मेयर फोट्र्स ने घरेलू समूहों को एक हाउसहोल्डिंग और हाउसकीपिंग समूह के रूप में परिभाषित किया है, जो अपने सभी सदस्यों के सबके विकास के लिए आवश्यक संसाधनों को व्यवस्थित करने में मदद करता है। फोट्र्स के अनुसार, प्रत्येक घरेलू समूह एक चक्रीय विकास से गुजरता है। घरेलू समूह के विकास चक्र में तीन मुख्य चरण होते हैं। विस्तार का पहला चरण दो व्यक्तियों के विवाह से लेकर उनके संतानोत्पत्ति तक पूरा होता है। फैलाव दूसरा चरण बड़े बच्चे के स्कूल या नौकरी या फिर, विवाह कर परिवार से बाहर जाकर रहने से शुरू होता है। यह अवधि तब तक जारी रहती है जब तक कि सभी बाहर नहीं चले जाते या या उनकी शादी नहीं हो जाती। उसके बाद बच्चों के परिवारों द्वारा स्थापित परिवार की सामाजिक संरचना में प्रतिस्थापन के चरण की बारी आती है। का चरण है।

8.2.1.4. घरेलू समूह और परिवार के बीच अंतर

लैटिन में परिवार का मूल अर्थ श्घरेलू समूहश् के समान है, लेकिन समाजशास्त्र में दोनों में इस आधार पर भेद किया जाता है कि कुछ घरेलू समूह ऐसे व्यक्तियों द्वारा

बनते हैं जिनका अपसा में कोई नातेदारी संबंध नहीं होता है। वहीं, एक परिवार के सदस्य, दो या अधिक घरेलू समूहों में बंटे हो सकते हैं। एकल परिवार और घरेलू समूह की वास्तविक संरचना एक समान हो सकती है। हालांकि, सामाजिक प्रजनन की हमारी जो अवधारणा है, उसमें प्रजनन कार्यों को भोजन के उत्पादन और आश्रय तथा बड़े पैमाने पर समाज की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए गैर–भौतिक साधनों के बीच भेद करके चला जा सकता है। दूसरे शब्दों में, घरेलू क्षेत्र को सामाजिक संबंधों की प्रणाली कहा जा सकता है जो प्रजनन केंद्र होता है और परिवेश तथा समग्र समाज की संरचना के साथ एकीकृत होता है।

8.2.2 समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

समाजशास्त्र परिवार को कई परिप्रेक्ष्यों से विश्लेषित करता है। उनमें चार प्रमुख सैद्धान्तिक दृष्टियाँ इस प्रकार हैं:

- प्रकार्यवाद
- संघर्ष सिद्धांत
- सामाजिक अंतःक्रियावाद
- नारीवादी दृष्टिकोण

ये परिप्रेक्ष्य परिवार की बतौर सामाजिक संस्था, विविध तरह की समझ प्रदान करते हैं।

8.2.2.1 प्रकार्यवाद – प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य परिवार को एक महत्वपूर्ण संस्था मानता है। इसके अनुसार, समाज और व्यक्तियों के लिए परिवार काफी महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। उन्होंने परिवार का उसके द्वारा किए जाने वाले कार्यों के संदर्भ में विश्लेषण किया है और ज्यादातर सकारात्मक कार्यों पर प्रकाश डाला है। इस सिद्धान्त की मानें तो समाज विभिन्न भागों से बनी एक प्रणाली है जो एक दूसरे पर निर्भर करते हैं। जॉर्ज मर्डॉक और टैल्कॉट पार्सन्स जैसे समाजशास्त्रियों ने परिवार की प्रकार्यवादी समझ विकसित की है। जॉर्ज मर्डॉक ने अपने विचार *सामाजिक*

संरचना (1949) में व्यक्त किए। टैल्कॉट पार्सन्स ने मर्डॉक की धारणा को आगे बढ़ाया। जॉर्ज मर्डॉक ने लिए परिवार के ने चार ये कार्य गिनाए – यौन–व्यवहार का नियमन, प्रजनन, आर्थिक सहयोग और समाजीकरण। टैल्कॉट पार्सन्स ने कहा की परिवार परिवार की महत्ता इसके द्वारा बच्चों के प्राथमिक समाजीकरण और वयस्क व्यक्तित्व को संतुलन प्रदान किए जाने में है।

प्रकार्यवादी सिद्धांतों द्वारा परिवार के इन कार्यों की बात की है:

• परिवार जैविक रूप से दो वयस्क सदस्यों को एक जोड़े के रूप में एक साथ यौन रूप से रहने और सामाजिक निरंतरता को बढ़ाने के लिए एक वैध मंच प्रदान करता है।

• परिवार आश्रय प्रदान करता है और भोजन सेवन को पूरा करने की बुनियादी चयापचय (मेटाबोलिक) आवश्यकता को पूरा करता है।

• परिवार एक आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करता है जिसमें सदस्य उत्पादक गतिविधियों में भाग लेते हैं; सदस्य समान या भिन्न कार्य कर सकते हैं

• परिवार में व्यक्ति की उम्र, लिंग और स्थिति और यहाँ तक कि व्यक्तिगत क्षमता के आधार पर घरेलू कार्यों का बँटवारा या आवंटन किया जाता है।

8.2.2.2 संघर्ष सिद्धांत यह मानता है कि सामाजिक समूहों के बीच संघर्ष समाज की विशेषता है। असमान सत्ता और प्रतिस्पर्धी हितों वाले समूह उन संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, जो कम हैं। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार पितृसत्तात्मक मूल्यों को बनाए रख कर, पारिवारिक संरचना लैंगिक और आर्थिक असमानता को बढ़ावा देती है और इस तरह, सामाजिक असमानता में अपना योगदान देती है। उदाहरण के लिए, परिवार के भीतर संपत्ति का अंतर्पीढ़ीय असमानता को पैदा करने के साथ–साथ उसे बरकरार रखता है।

8.2.2.3 सामाजिक अंतःक्रियावाद एक सामाजिक सिद्धांत है जो प्रतीकों के अर्थ के संदर्भ में व्यक्तियों के अंतरूक्रिया, व्याख्या और समायोजन के पैटर्न के विश्लेषण पर केंद्रित है। यह परिप्रेक्ष्य इस बात पर जोर देता है कि परिवार, एक ही जगह इकट्ठे होकर भोजन और छुट्टियों जैसी प्रतीकात्मक प्रतीकात्मक प्रक्रिया के जरिए बंधनों को सुदृढ़ और पुनर्जीवित करते हैं। यह परिप्रेक्ष्य परिवार के बदलते अर्थों पर भी बात करता है। इस सिद्धांत का तर्क है कि साझा गतिविधियाँ परिवार के सदस्यों के बीच भावनात्मक बंधन बनाने में मदद करती हैं, और यह कि विवाह और पारिवारिक संबंध बातचीत के अर्थ पर आधारित होते हैं।

बोध प्रश्न 1

1. वे कौन से तीन तत्व हैं जो प्रचलित समझ के अनुसार परिवार की विशेषता बताते हैं?

.....
.....
.....
.....

2. कार्यात्मक सिद्धांतों द्वारा बताए गए परिवार के किन्हीं चार कार्यों का उल्लेख कीजिए।

.....
.....
.....
.....

8.3. क्लासिकल सिद्धान्त की समस्याएँ और चुनौतियाँ

इस खंड में जुड़ाव या संबद्धता के विचार पर विस्तार से बताया गया है, जैविक रूप से पारंपरिक स्थापित नातेदारी और पारिवारिक संबंधों के विपरीत ठहरते हैं। इसमें गोद लेने पर आधारित आत्मीयता और समलैंगिक संबंधों/रिश्तेदारी फोकस

किया गया है। समकालीन समाज में, जब परिवार को सुरक्षित आश्रय के रूप में पेश किया जाता है तो बहुत–सी अनिश्चितताएँ सामने आती हैं। सवाल यह उठता है कि क्या प्रत्येक संस्कृति में परिवार अपने सदस्यों को भावनात्मक और शारीरिक सुरक्षा प्रदान करने में सक्षम है। उत्तर नकारात्मक ही होगा। विशेष रूप से अपनों ही द्वारा बाल यौन शोषण में हो रही वृद्धि, संपत्ति को लेकर भाई–बहनों के बीच विवादों में बढ़ोतरी, महिलाओं के साथ बढ़ती घरेलू हिंसा और बढ़ता, साथ ही समलैंगिकों/ट्रांसजेंडरों के मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों को देखते हुए परिवार हरगिज सुरक्षित आश्रय नहीं रह जाता है। परिवार को सहमति दे रहे दो व्यक्तियों के बीच मिलन के रूप में भी परिभाषित नहीं किया जा सकता है। बल्कि कई लोगों ने बिना इच्छा या विकल्प के परिवार में पैदा होने के तथ्य पर सवाल उठाना शुरू कर दिया है और इसलिए पसंद या इच्छा से बनाए गए परिवार की धारणा पनपी है।

8.3.2. गोद लेकर परिवार बनाना

गोद उन लोगों के बीच माता–पिता और बच्चे का पारिवारिक संबंध बनाता है जो स्वाभाविक या जैविक रूप से संबंधित नहीं हैं। यह मातृत्व या पितृत्व के एकमात्र आधार के रूप में जीव विज्ञान की अनिवार्यता को चुनौती देता है। संक्षेप में, यह कानून के माध्यम से जुड़ाव की ओर ध्यान आकर्षित करता है। ऐतिहासिक रूप से, लगभग सभी समाजों में गोद लेने की रीति रही है। यह सभी मनुष्यों के पितृत्व या मातृत्व प्राप्त करने के विचार की केंद्रीयता को दर्शाता है। हालाँकि, पारंपरिक संदर्भों में गोद लेने का उद्देश्य आज के उद्देश्य से काफी भिन्न है। प्राचीन काल में निःसंतान दंपतियों ने राजनीतिक, धार्मिक या आर्थिक कारणों से पुरुष वंश की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए गोद लेने का सहारा लिया है। नतीजतन, तब पुरुष या लड़के को अपनाना मुख्य रूप से प्रचलित था। तब बच्चे के कल्याण और भलाई का पहलू महत्वपूर्ण नहीं था। इसके विपरीत, गोद लेने से संबंधित आधुनिक कानून मूल रूप से बच्चे के कल्याण से जुड़ा हुआ है। यूरोप और संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रथम विश्व युद्ध के बाद की अवधि में इस विचार को बल मिला क्योंकि बड़ी संख्या में बच्चे अनाथ हो गए थे और नाजायज संतानों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई थी। बाद में मनोविज्ञान और समाजशास्त्र जैसे विषयों के विद्वानों के

अध्ययनों से इस विचार को बल मिला कि बच्चे के विकास पर स्थिर पारिवारिक जीवन के सकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं।

वर्तमान संदर्भ में, निःसंतान दंपत्ति तो गोद ले ही सकते हैं। सह ही, कोई अविवाहित वयस्क अकेले भी गोद लेकर एकला माता या पिता की भूमिका निभा सकता है। गोद लेना समलैंगिक जोड़ों और उन व्यक्तियों के लिए भी व्यवहार्य विचार है जो अपना एक स्वतंत्र परिवार शुरू करना चाहते हैं। हालाँकि, भारत में संविधान की धारा 377 को निरस्त करने के बावजूद, जिसने समलैंगिकता को अपराध की श्रेणी से बाहर कर दिया है, समलैंगिक अभी भी गोद लेने के योग्य नहीं हैं। गोद लेने के संबंध में विभिन्न देशों में अलग–अलग कानून और कानूनी प्रक्रियाएं हैं। भारत में किशोर न्याय (देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2015 गोद लेने के प्रावधान और मानदंड बताता है। इस अधिनियम के अनुसार गोद लेना वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से दत्तक बच्चे को उसके जैविक माता–पिता से स्थायी रूप से अलग कर दिया जाता है और वह जैविक बच्चे से जुड़े सभी अधिकारों और दायित्वों के साथ दत्तक माता–पिता की वैध संतान बन जाता है। अधिनियम भारत में का पांच प्रकार के गोद लेने को मान्यता देता है। इनमें छोड़ दिए गए, दे दिए गए, देश या विदेश में रहने वाले असंबद्ध व्यक्तियों द्वारा बेसहारा बच्चों का गोद लिया जाना शामिल है। इसी तरह, किसी बच्चे को देश के भीतर और बाहर रहने वाले रिश्तेदारों द्वारा गोद लिया जा सकता है। साथ ही, सौतेले माता–पिता देश के भीतर बच्चों को गोद ले सकते हैं।

8.3.2. सौतेला परिवाररू परिवार की पुनर्परिभाषा

सौतेले परिवार कोई नई बात नहीं हैं। वे हमेशा से मौजूद रहे हैं। लेकिन 1970 के दशक से पहले समाजशास्त्रीय और मानवशास्त्रीय अध्ययनों ने उनकी तरफ गौर नहीं किया था। अब दो आधारों पर सौतेले परिवारों का बहुत अध्ययन हुआ है। पहला, कई पश्चिमी देशों के साथ–साथ भारत में पुनर्विवाह के मामले बढ़ने के कारण सौतेले परिवारों या मिश्रित परिवारों के मामले बढ़ गए हैं।

सौतेले परिवार को ऐसे परिवार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें माता–पिता में से कम–से–कम एक का बच्चा या पिछले संबंध से हो। इस परिभाषा के अनुसार सौतेले परिवार, रक्त आधारित परिवार की पारंपरिक परिभाषा में फिट नहीं बैठते हैं और ऐसे परिवारों में कई तरह के संघर्ष भी चल रहे हैं। सौतेले परिवार में बच्चे एक जैविक या दत्तक माता–पिता के साथ रह सकते हैं, या वे प्रत्येक जैविक या दत्तक माता–पिता के साथ कुछ–कुछ समय के लिए रह सकते हैं

सौतेले परिवार कई कारणों से एकल–जैविक परिवारों से भिन्न होते हैं। सौतेले परिवारों में समस्याएँ, पिता या माता के पुनर्विवाह से परिवार में नए सदस्य के प्रवेश से उपजती हैं। समस्या केवल बच्चे को लेकर नहीं बल्कि सदस्यों के बीच जिम्मेदारियों को साझा करने को लेकर भी उत्पन्न होती है। ऐसे परिवारों में माता–पिता की जिम्मेदारी की पूरी धारणा बदल जाती है। वे सदस्यों को रहने की जगह साझा करने, संबंध विकसित करने, पिछले पति या पत्नी के साथ संबंधों पर बातचीत करने के साथ–साथ भावनात्मक और मानसिक मुद्दों का भी सामना करना पड़ता है।

8.4 क्लासिकल सिद्धांत की आलोचना

समाजशास्त्र में परिवार की परिभाषाएं जीव विज्ञान की पश्चिमी सांस्कृतिक समझ और परिवार के गठन को केंद्र में रखकर रची जाती रही हैं। 1970 के दशक से पहले, अधिकांश समाजशास्त्री परिवार को घर से अलग करने और औद्योगीकरण के कारण होने वाले सामाजिक परिवर्तनों की तुलना के लिए इसका उपयोग करने के कार्य में लगे हुए थे। परिवार की प्रमुख धारणा सदस्यों के लिए प्रजनन की जगह तथा बढ़ती तार्किकता और वैज्ञानिकता के प्रभाव के समक्ष एक सुरक्षित आसरे के रूप में थी। इसमें 1970 के दशक के बाद बदलाव आना शुरू हुआ, जब परिवार के प्रकार्य की पारंपरिक समझ को चुनौती मिलनी शुरू हुई। परिवार को उसकी लचीली प्रकृति के संदर्भ में परिकल्पित किया जाने लगा, जो नातेदारी के एक प्रदत्त जैविक तथ्य और उसकी सामाजिक, निर्मित और प्रक्रियात्मक के बीच के विभाजन द्योतक है।

यह हिस्सा परिवार को सामान्य रूप से एक संस्था के रूप में देखता है, और विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में, इसकी आलोचना करते अध्ययनों के बारे में विस्तार से बताता है। ये आलोचनाएँ इसलिए प्रासंगिक हैं कि वे जैविक और वैवाहिक संबंधों से परे वैकल्पिक वैकल्पिक व्यवस्थाओं को समझने के लिए परिप्रेक्ष्य प्रदान करती हैं।

8.4.1. सांस्कृतिक सिद्धान्त: रक्त और वैवाहिक संबंधों से परे

सांस्कृतिक सिद्धांतकारों ने यह दावा किया कि परिवार की क्लासिकल परिभाषाएं, जीव विज्ञान और उसके नातेदारी के साथ संबंधों के बिना जाँचे या पड़ताल से काफी प्रभावित थीं। उनका मुताबिक परिवार का अध्ययन करने वाले समाजशास्त्री के पास केवल दो काम थे। एक तो पहला परिवार की घर से तुलना और उनके बीच भेद करना और दूसरा, औद्योगीकरण के प्रभाव के कारण होने वाले बदलावों की पड़ताल करना। जैसा कि पिछले हिस्से में हमने पाया, परिवार को एक प्रकार्यात्मक इकाई के रूप में परिभाषित किया गया था, जहाँ प्रजनन, भावनात्मक संबंध और अन्य घरेलू कार्यों का निष्पादन होता था। हालाँकि, 1980 के दशक के बाद, परिवार के सिद्धांतों में परिवर्तन दिखाई देने लगे। विशेष रूप से, नातेदारी के अध्ययन में, जहाँ परिवार की सार्वभौमिकता और इसके सामाजिक उद्देश्यों के बारे में पारंपरिक अंतर्निहित धारणाओं पर बहस हुई और अंततः उन्हें खारिज किया गया।

परिवार को लचीले प्रकृति वाली संस्था के रूप में परिकल्पित किया जाना शूर किया गया जो नातेदारी के प्रदत्त रूप तथा उसके सामाजिक, निर्मित और प्रक्रियात्मक रूप के बीच के भेद से प्रदर्शित हो रहा था।

इस तरह परिवार को एक आदर्श एकल परिवार और पुनरुतपादन के जैविक बंधनों से परे परिकल्पित किया जाने लगा। परिवार के अर्थ को दो स्तरों पर पुनर्रचित किया गया है:

1. अब बच्चे उसके लिए पूर्व शर्त नहीं रह गए हैं और

2. दोस्तों को शामिल करने के लिए पारिवारिक संबंधों को विस्तारित किया गया है।

परिवार की इस तरह की समझ ने परिवार संबंधी विमर्श व्यापक बना दिया जिसके मायने रोजमर्रा की परिस्थितियों में लगातार पुनर्व्यवस्थित किए जाते थे। आर्थिक वास्तविकताओं, जेंडर भूमिकाओं और नातेदारी की अवधारणाओं में बदलाव के कारण समकालीन उत्तर–औद्योगिक पारिवारिक जीवन की रचनात्मक प्रकृति को जाहिर करने के लिए जूडिथ स्टेसी ने ब्रेव न्यू फैमिलीज फिकरे का प्रयोग किया है। समलैंगिक परिवार के सिद्धांत ने विषमलैंगिक परिवार की धारणा के आदर्श को चुनौती चुनौती दी। परिवारों के नए अवधारणाकरण में ज़ोर मानवीय संपर्क, जेंडर संबंध और माता–पिता के साथ बच्चे के संबंध दिया गया है। सांस्कृतिक सिद्धांतकारों के अनुसार, परिवार निर्माण के वैकल्पिक तरीके हैं जो विशुद्ध रूप से जैविक या विवाह संबंधों पर आधारित औपचारिक उद्देश्यों की जगह जुड़ाव के व्यक्तिपरक अर्थ को दर्शाते हैं।

8.4.2 नारीवादी परिप्रेक्ष्यः सत्ता और भेद–भाव

मुख्यधारा के अध्ययनों ने परिवार को सहयोग, सद्भाव, सामान्य हितों और समानता पर आधारित एक अनिवार्य सामाजिक संस्था के रूप में वर्णित किया है। काफी हद तक उन्होंने परिवार के भीतर 'पुरुष' को अपने अध्ययन की मूल इकाई के रूप में भी लिया है और महिला के अनुभवों की उपेक्षा की है। नारीवाद ने परिवार के एक सहकारी, सामंजस्यपूर्ण और समतावादी क्षेत्र होने के इस दावे को चुनौती दी। नारीवादियों यह दिखाने की कोशिश की है कि सभी सदस्यों के समान योगदान के आधार पर बनाए गए और पारस्परिक रूप से लाभप्रद संस्था होने की जगह, परिवार में बड़े पैमाने पर महिला श्रम का शोषण होता है। नारीवादी आलोचनाएँ, परिवार में निहित सत्ता की कार्यप्रणाली पर ध्यान केंद्रित कर उसकी पड़ताल करती हैं। वे पदानुक्रम और यौन दमन पर प्रकाश डालती, जो परिवार के अंतर्गत आते हैं। इस

तरह नारीवादी आलोचनाएँ परिवार के असमानतावादी और दमनकारी चरित्र को सामने लाती हैं।

मार्क्सवादियों और प्रकार्यवादियों के समान नारीवादियों ने यह तर्क दिया है कि परिवार अनिवार्य रूप से एक रूढ़िवादी संस्था है, जो सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए कार्य करता है। हालाँकि वे इस बात को लेकर प्रकार्यवादियों से असहमति और मार्क्सवादियों से सहमति दर्ज करती हैं कि इससे समाज के एक शक्तिशाली समूह को ही लाभ होता है। नारीवादियों के लिए, यह समूह समूची पुरुष जमात है। उनका कहना है कि परिवार पितृसत्ता को सरक्षण, समर्थन और सहारा देता है। नारीवादी परिवार के भीतर मौजूद असमान सत्ता संबंधों को मान्यता नहीं देने के लिए नारीवादी, मुख्यधारा के सिद्धांतों की आलोचना करते हैं जो महिला के जीवन और अधिकारों की कीमत पर पितृसत्ता को बनाए रखने में मदद करते हैं। ओकिन (1989) का मानना है कि समाज की आधारभूत संस्था परिवार से ही न्याय गायब है। वह विस्तार से बताती हैं कि विवाह और पारंपरिक पारिवारिक संरचना में महिलाओं की निर्भरता और शोषण और उनके प्रति दुर्व्यवहार की संभवना बढ़ जाती है। ओकिन ने न्याय–विषयक पारंपरिक विद्वत्ता की आलोचना की है जो परिवार को महान संस्था, नैतिक समुदाय और 'विस्तारित स्नेह' के उदाहरण के रूप में पेश करती है। नारीवादी आलोचना पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं में श्रम के असमान विभाजन पर सवाल उठाते हुए हमें जेंडर असमानता से अवगत कराती है, जहाँ महिलाओं को घर का काम–काज करने और बच्चों का पालन–पोषण करना होता है और पुरुष जीविकोपार्जन का काम करते हैं। इससे पुरुषों पर महिलाओं की आर्थिक निर्भरता बढ़ जाती है और उनमें से कई तलाक से डरती हैं, हिंसा और दुर्व्यवहार का शिकार होती हैं। इसके अलावा, जब महिलाएं घर से बाहर काम की तलाश करती हैं, उन पर पारिवारिक जिम्मेदारियों का भी बोझ बना ही रहता है। यानी महिलाओं द्वारा जीविकोपार्जन करने पर भी परिवार में उनके साथ न्याय नहीं होता। स्थिति पूर्ववत ही बनी रहती है (पगाक 1990:1822)।

वहीं, राजस्थान की वाचिक लोक परंपरा में स्त्री की छवि की अध्येता रहेजा और गोल्ड (1996) ने इस तरफ ध्यान दिलाया है कि महिलाओं के लोकगीतों में किस तरह परिवार की पारंपरिक अवधारणा और उसमें स्त्रियों की स्थिति की आलोचना हुई है। लेकिन इनमें महिलाओं की सकारात्मक छवि की अभिव्यक्ति ही हो पाई है।

कहने का आशय यह कि महिलाएं अपने दौयम दर्जे के प्रति सचेत होकर अपनी छवि को सकारात्मक रूप में पेश करती हैं, लेकिन वे असमानताओं, हानियों और यौन–दमन को खारिज या उनका विरोध नहीं करती हैं। कारलेकर (1998) ने भारतीय संदर्भ में परिवार को हिंसा के स्थल के रूप में चिन्हित किया है और इसलिए, इसे सांस्कृतिक तौर पर आदर्श माने जाने की धारणा पर सवाल उठाया है। अपनी बात को रखने के लिए उन्होंने जीवन–चक्र दृष्टिकोण का उपयोग किया है और दिखाया है कि मायका हो या ससुराल, खासकर लड़कियों और बाद में, महिलाओं के साथ हर स्तर पर हिंसा होती है (पृष्ठ 1741) । कि हर स्तर पर भेदभाव और हिंसा होती है, विशेष रूप से बालिकाओं और बाद में घर की महिलाओं के खिलाफ, या तो जन्म या वैवाहिक । इस संदर्भ में वे कन्या भ्रूण हत्या, बाल श्रम और दांपत्य हिंसा आदि जैसी पारिवारिक हिंसाओं पर फोकस करती हैं।

बोध प्रश्न 2

1. परिवार की एक जैविक इकाई की समझ को सांस्कृतिक सिद्धांत कैसे चुनौती देता है? तीन/चार पंक्तियों में उत्तर लिखें

.....

.....

.....

.....

2. परिवार की संस्था के बारे ओकिन की क्या धारणा है? (एक संक्षिप्त पैराग्राफ में विस्तार से बताएं)

.....

.....

.....

.....

8.5. परिवार के नए रूप

औद्योगीकरण, महिलाओं की बढ़ती स्वतंत्रता, शिक्षा के स्तर में वृद्धि, आर्थिक बदलाव, कानून, नारीवादी समालोचना और राजनीतिक विमर्शों जैसे कारकों और अन्य कई ताकतों के कारण परिवार के रूप में बदलाव होते रहे हैं। परिवार उनसे प्रभावित होता रहा है। 1970 के दशक से परिवार की संरचना में परिवर्तन होते रहे हैं। परिवार के नए रूप सामने आए हैं। जैसे, एकल माता या पिता परिवार, समलैंगिक या पसंद के परिवार, बिना विवाह के लिव–इन। इन रूपों को 'गैर–पारंपरिक' परिवार कहा गया, क्योंकि वे जैविक और गठबंधन के आधार पर बने परिवार की शास्त्रीय परिभाषा में फिट नहीं बैठ रहे थे। हालाँकि, कई अकादमिकों ने परिवार के उन रूपों के संदर्भ में 'नया परिवार' शब्द का उपयोग करना पसंद किया जो बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक मौजूद नहीं थे या दिखाई नहीं दे रहे थे। इस खंड में कुछ ऐसे ही पारिवारिक पैटर्न और व्यवस्थाओं पर विचार किया गया है, जो परिवार की पारंपरिक समझ से परे ठहरते हैं।

8.5.1 पसंद का परिवार

पसंद या मर्जी से चुने गए परिवार पद का प्रयोग कैथ वेस्टन ने उसे 'जैविक परिवार' से भिन्न दर्शाने के लिए किया था। वेस्टन के अनुसार, "नातेदारी स्थायी, अटूट और जन्म या रक्त से जुड़े होने की बजाय प्रयास या चयन से बनाई गई प्रणाली के रूप में दिखलाई देने लगी"। वेस्टन का अध्ययन समलैंगिकों के बीच के संबंध के संदर्भ में परिवार और नातेदारी को पुनरपरिभाषित करने के लिए महत्वपूर्ण आधार मुहैया करता है। यह सुझाता है कि परिवार के निर्माण के लिए लोगों के पास एक विकल्प है यह वंशावली के आधार पर नातेदारी पर सवाल उठाता है और इसे जांच के दायरे में लाता है। इसका मतलब यह है कि नातेदारी को प्रजनन के आधार पर परिकल्पित करने की जरूरत नहीं है। वेस्टन का अध्ययन अमेरिका में समलैंगिकों गैर–प्रजनन, गैर–भौतिक और प्रतीकात्मक संबंधों पर रोशनी डालता है।

यह जीवविज्ञान, आनुवंशिकी और विषमलैंगिक यौन–संबंध आधारित परिवार की संकल्पना पर सवाल खड़े करता है।

मर्जी से बनाया गया परिवार इस तथ्य का एक उदाहरण है कि जैविकता ही नातेदारी की एकमात्र चारित्रिक खासियत नहीं है। रक्त और वैवाहिक संबंध के बिना भी लोग परिजन हो सकते हैं। ऐसे पारिवारिक व्यवस्थाओं में नातेदारी, प्रेम और स्थायी एकजुटता पर आधारित होता है। इसके अलावा, यह विषमलैंगिकता आधारित प्रजनन के विचारों को भी नकारता है। परिवार को केवल प्रजनन की इकाई के रूप में नहीं देखा जाता है बल्कि यह गैर–प्रजनन इकाई भी हो सकता है। इस तरह के पारिवारिक संबंध मर्जी और प्रेम की विचारधारा पर आधारित होते हैं और नातेदारी के जैविक मॉडल के ठीक विपरीत होते हैं। इसलिए पसंद के परिवार नातेदारी के जैविक रूप पर आधारित विषमलैंगिक डोमेन पर सवाल उठाने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार के रूप में उभरे हैं, जो समलैंगिकों की सहायता और सुरक्षा में विफल रहा है।

8.5.2 लिव–इन संबंध

लिव–इन संबंध, विवाह द्वारा परिवार बनाए जाने की परंपरा से परे जाकर साथ रहने की व्यवस्था के रूप में पसंदीदा तरीका बन कर उभरा है। लिव–इन संबंध एक ऐसी व्यवस्था है जिसके तहत दो वयस्क बिना विवाह किए भावनात्मक और यौन–अंतरंग संबंध में लंबे समय के लिए स्थायी तौर पर एक साथ रहने का निर्णय लेते हैं। विषमलैंगिक और समलैंगिक दोनों ही तरह के जोड़े इस प्रकार के संबंध में रह सकते हैं। लिव–इन संबंध को दुनिया भर के शहरों में युवा पीढ़ी द्वारा ज्यादा तरजीह दी जा रही है। के बीच लिव–इन संबनद्ध रिलेशन को प्राथमिकता दी जाती है। ऐसे कई कारण हैं जो लिव–इन संबंध के चयन की ओर उन्मुख कर सकते हैं। इसकी बुनियाद किसी व्यक्ति के अपने साथी को चुनने की स्वतंत्रता के मौलिक अधिकार में है। कई लोगों के लिए यह विवाह से पहले आपसी सामंजस्य का आकलन करने या आर्थिक तौर पर मजबूत होने के एक उपाय के रूप में भी उभरा है। कुछ को इससे विवाह में होने वाले खर्च से बच निकलने की सहूलियत मिली है। इसके अलावा, यह उनके लिए भी एक विकल्प के रूप में उपयोगी नजर आया

है जो कई कारणों से औपचारिक तौर पर विवाह कर साथ नहीं रह सकते हैं। उदाहकरण के लिए, समलैंगिक, अंतर्धार्मिक या अंतरजातीय जोड़े आदि।

हालाँकि, लिव–इन संबंध को कई लोग अनैतिक और उन्मुक्त यौन व्यवहार को बढ़ावा देने वाला मानते हैं। ऐसे संबंध को विवाह और परिवार रूपी पारंपरिक संस्था के लिए खतरे के रूप में देखा जाता है। इसके अलावा, इन संबंधों से पैदा हुई संतानों के भविष्य के कम सुरक्षित होने की तरफ भी संकेत किया जाता है। संक्षेप में, इन संबंधों को जायज रूप से विवाहिता पत्नी और उसके बच्चों के लिए खतरे और विवाहेतर संबंधों को उकसावा देने के रूप में देखा जाता है। इस तरह के संबंधों को चिकित्सकीय आधार पर भी चुनौती दी गई है और इन्हें एचआईवी/एड्स के बढ़ते मामलों के लिए जिम्मेदार बताया गया है। लिव–इन संबंधों को विवाह पर आधारित संबंधों की तुलना में बहुत कम समय तक चलने वाला माना जाता है क्योंकि उन्हें खत्म करने के लिए कानूनी सहारा की आवश्यकता नहीं होती है। हालांकि लिव–इन संबंधों और उनसे पैदा हुए बच्चों को कानूनन मान्यता दी गई है, लेकिन ये बच्चे हिंदू पैतृक सहदायिक संपत्ति (अविभाजित हिंदू संयुक्त परिवार में) में हक का दावा नहीं कर सकते। वे केवल माता–पिता द्वारा अर्जित संपत्ति में में हिस्सेदारी का दावा कर सकते हैं।

8.5.3. सरोगेसी परिवार

'सरोगेसी परिवार' शब्द का इस्तेमाल ऐसे तीसरे पक्ष (आमतौर पर एक महिला) की मदद से बने परिवार के लिए किया जाता है, जो बच्चे के लिए अपनी कोख किराए पर देती है। सरोगेट को फर्टिलिटी क्लिनिक के साथ यह कानूनी अनुबंध करना होता है कि बच्चे के जन्म लेने के बाद उस पर सरोगेट का कोई दावा या उसके साथ कोई संबंध नहीं होगा। सरोगेसी परिवार भी पारंपरिक परिवार के समान ही होता है। भेद केवल मातृत्व की धारणा में होता है। यहाँ मातृत्व को गर्भधारण की अवधि से नहीं बल्कि गर्भ को किराए पर देने की क्षमता से परिभाषित किया जाता है। माँ और बच्चे के बीच गर्भकालीन संपर्क के न होने का प्रभाव, उनके शारीरिक और भावनात्मक संबंधों पर नहीं पड़ता है। जैविक/चिकित्सकीय कारणों से

गर्भधारण न कर पाने वालों, समलैंगिक साथियों और बिना विवाह किए बच्चे पालने की हसरत रखने वालों के लिए सरोगेसी अवसर प्रदान करती है।

बोध प्रश्न 3

1. पसंद के परिवार और जैविक परिवार के बीच कोई दो भेद बताएँ।

.....

.....

.....

.....

2. प्रजनन तकनीकी के प्रभाव के कारण परिवार के नए रूपों के गठन को उपयुक्त उदाहरण के साथ चित्रित करें।

.....

.....

.....

.....

8.6. सारांश

इस इकाई की शुरुआत इस बात पर ध्यान केंद्रित करने हुई कि आम तौर परिवार की संस्था को कैसे आधारशिला/बुनियादी इकाई और मानव समाज का एक अनिवार्य हिस्सा माना जाता है। इसे अधिकांशतरू सकारात्मक, प्रभावोत्पादक और वांछनीय माना जाता है। हालांकि बाद में इकाई में यह बताया गया कि इस तरह की समझ कैसे परिवार के भीतर गौर करने और इस पर पुनर्विचार करने को हतोत्साहित करती है। ऐसा करने में इकाई ने नारीवादी आलोचनाओं तथा परिवार और नातेदारी की पारंपरिक/पारंपरिक धारणाओं के आधार पर कई मान्यताओं पर उनके सवालों पर विचार किया। ये परिवार में महिलाओं की भूमिका पर हमला करके परिवार की बुनियाद हिलाते हैं। फिर, प्रेम और लिव–इन संबंधों की विचारधारा पर आधारित परिवारों जैसे विभिन्न विकल्पों को पारंपरिक रूप से यौन

दमनकारी पारिवारिक रूपों और नातेदारी पैटर्न के साथ ज़ोर–तोड़ करने के संभावित तरीकों के रूप में देखा जा सकता है। पुनः, इकाई ने सौतेले परिवार द्वारा पेश की गई चुनौतियों की बात की जो दर्शाती है कि परिवार में होना हमेशा संतोषजनक अनुभव नहीं हो सकता है।

इकाई में परिवार के उन विविध रूपों और पैटर्न की चर्चा की गई जो हमें जैविकता के दायरे से बाहर निकलने की अनुमति देता है। सौतेला परिवार, गोद लेने पर आधारित परिवार, पसंद आधारित परिवार, समलैंगिक परिवार दृ ये सभी जैविकता–निर्धारित परिवार और नातेदारी की समझ को चुनौती देते हैं।

8.7 प्रमुख शब्द

घर – घर निवास की बुनियादी इकाई होता है जहाँ आर्थिक उत्पादन, उपभोग, उत्तराधिकार, बच्चों का पालन–पोषण और आसरे का आयोजन और संचालन किया जाता है। घर (घर) आवासीय और घरेलू इकाई है जिसमें एक या एक से अधिक व्यक्ति एक ही छत के नीचे रहते हैं और एक ही रसोई (चूल्हा / चूल्हा) में पका हुआ खाना खाते हैं।

घरेलू समूह – मेयर फोर्ट्स ने घरेलू समूहों को एक हाउसहोल्डिंग और हाउसकीपिंग समूह के रूप में परिभाषित किया है, जो अपने सभी सदस्यों के सबके विकास के लिए आवश्यक संसाधनों को व्यवस्थित करने में मदद करता है।

सौतेला परिवार – सौतेले परिवार को ऐसे परिवार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें माता–पिता में से कम–से–कम एक का बच्चा या पिछले संबंध से हो।

लिव–इन – लिव–इन रिलेशनशिप यानी सहवास एक ऐसी व्यवस्था है जिसके तहत दो वयस्क विवाह के बंधन के बाहर भावनात्मक और यौन अंतरंग संबंध में दीर्घकालिक और स्थायी आधार पर एक साथ रहने का निर्णय लेते हैं।

सरोगेसी – 'सरोगेसी परिवार' शब्द का इस्तेमाल ऐसे तीसरे पक्ष (आमतौर पर एक महिला) की मदद से बने परिवार के लिए किया जाता है, जो बच्चे के लिए अपनी कोख किराए पर देती है।

8.8. संदर्भ

आचार्य, कालिका, (एनडी), 'लिव–इन–रिलेशनशिप इन इंडिया एंड इट्स इम्पैक्ट – ए सोशियोलॉजिकल स्टडी' https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=3451288

चौधरी, प्रेम. 1997, इंफोर्सिंग कल्चरल कोड्सरू जेंडर एंड वायलेंस इन नॉर्थ इंडिया, *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, खंड 32, संख्या 19 पृष्ठ 1019–1028।

फोर्ट्स एम, द स्ट्रक्चर ऑफ युनिलीनियल डिसेंट ग्रूप्स, *अमेरिकन एंथ्रोपोलोजिस्ट*, 1953, जनवरी 3; 55(1)रू17–41.

फ्रूजेट्टी, लीना एम, द गिफ्ट ऑफ ए वर्जिनरू वीमेन, मैरिज एंड रिचुअल इन ए बंगाली सोसाइटी, दिल्लीरू ओयूपी, 1993। परिचय और अध्याय 1, संप्रदान रू द गिफ्ट ऑफ विमेन एंड स्टेटस ऑफ मेन, पृष्ठ 1–28

गोपाल, स्वाति (एन.डी.), 'लिव–इन रिलेशन्स', http://www.legalservicesindia.com/article/211/Live-in-Relationships.html

ग्रोस, एम्मा आर. 1992, 'आर फैमिलीज डेटेरिओटेरेटिंग ऑर चेंजिंग?, *एफीलिया*, खंड 7, संख्या 2, ग्रीष्म, पृष्ठ 7–22

कार्लेकर, मालविका, 1998. 'डोमेस्टिक वायलेंस', *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, खंड 33, संख्या 27, जुलाई पृष्ठ 1741–1751

लेविन, एलेन.1993, " फैमिलीज वी चूज एंड कंटेम्पोररी एंथ्रोपोलोजी", *साईन्स*, ग्रीष्म, खंड 18, संख्या 4, पृष्ठ 974–979

मिटरौएर, माइकल और रेनहार्ड सीडर, *द यूरोपियन फैमिली*, शिकागो, यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस, 1982, अध्याय 1 फैमिली एज अन हिस्टोरिकल सोशल फॉर्म, पृष्ठ 1–21

ओकिन, सुसान मोलर.1989, *जस्टिस, जेंडर एंड द फैमिली*, न्यूयोर्करू बेसिक बूक्स। अध्याय 2, द फैमिली बियोंड जस्टिस, पृष्ठ 25–40

पैगैक, क्रिस्टीन ए, 1990, 'जस्टिस, जेंडर एंड द फैमिली', मिशिगन लॉ रिव्यू, खंड 88 संख्या 6, पृष्ठ 1822–27 https://repository.law.umich.edu/mlr.edu

रहेजा, ग्लोरिया गुडविन और एन ग्रोडज़िन्स गोल्ड, *लिसेन टू द हेरॉन्स वड़्सरू रिइमेजिनिंग जेंडर एंड किनशिप इन नॉर्थ इंडिया*, दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1996। अध्याय 2, सेक्सुअलिटी, फर्टिलिटी एंड इरोटीक इमेजिनेशन इन राजस्थानी विमेंस सोंग्स, पृष्ठ 30–72.

सोनावत, रीता.2001, 'अंडरस्टैंडिंग फैमिलीज इन इंडिया: ए रिफ्लेक्शन ऑफ सोशल चेंजेस', *Psicologia: Teoria e Pesquisa*, खंड 17, संख्या 2, ब्रासीलिया मई/अगस्त।

शाह, ए.एम. 1968, 'चेंजेज इन द इंडियन फैमिलीरू एन एगजामिनेशन ऑफ सं असंपसंश', *इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली*, खंड 3, संख्या 1/2, पृष्ठ 127–134

वेस्टन, कैथ, *फैमिलीज वी चूज*, न्यूयॉर्क: कोलम्बिया यूनिवर्सिटी प्रेस, १९९१। अध्याय 2, एक्साइल्स फ्रम किनशिप, पृष्ठ 21–42.

वोर्स्ली, पीटर, *इंटरोडयूसिंग सोशियोलोजी*, हार्मोंड्सवर्थ: पेंगुइन बुक्स, 1984। अध्याय 4, द फैमिली, पृष्ठ 165–209।

.....'एडोप्शन https://www.britannica.com/topic/adoption-kinship

8.9. बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्नों के उत्तर 1

1.आम तौर पर परिवार की विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

- प्रजनन के उद्देश्य से पुरुष और महिला के बीच एक मिलन – परिवार प्रजनन के प्राथमिक कार्य को पूरा करने के उद्देश्य से बनता है और इसलिए, इसे पुरुष और महिला के बीच सहवास के रूप में परिभाषित किया जाता है।

- विवाह के माध्यम से जायज संस्था दृ परिवार बनाने के लिए पुरुष और महिला के बीच के सहवास या मिलन को मिलन समुदाय द्वारा अनुष्ठित विवाह के माध्यम से ही वैध बनाया जाता है।

2.परिवार अपने सभी सदस्यों को आर्थिक, भावनात्मक और शारीरिक सुरक्षा प्रदान करने का कार्य करता है।

3.प्रकार्यवादी सिद्धांतों के मुताबिक परिवार की संस्था द्वारा किए जाने वाले कार्य इस प्रकार हैंः

- जैविक रूप से परिवार दो वयस्क सदस्यों को एक जोड़े के रूप में एक साथ यौन संबंध बनाने और सामाजिक निरंतरता बढ़ाने के लिए एक वैध मंच प्रदान करता है।
- परिवार आश्रय प्रदान करता है और खान–पैन जैसी बुनियादी चयापचय (मेटाबोलिक) आवश्यकता को पूरा करता है।
- परिवार एक आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करता है जिसमें सदस्य उत्पादक गतिविधियों में भाग लेते हैं; सदस्य समान या भिन्न कार्य कर सकते हैं।
- परिवार में व्यक्ति की उम्र, लिंग और स्थिति और यहाँ तक कि व्यक्तिगत क्षमता के आधार पर घरेलू कार्यों का विभाजन किया जाता है।

बोध प्रश्नों के उत्तर 2

1. सांस्कृतिक सिद्धांतकारों के मुताबिक परिवार के पारंपरिक सिद्धांत दो चीजों पर केंद्रित थे, पहला परिवार की घर से तुलना और उससे भेद करने के देखना और दूसरा औद्योगीकरण के प्रभाव के कारण होने वाले परिवर्तनों की पड़ताल करना। सांस्कृतिक सिद्धांतों ने उक्त धारणाओं में विस्तार लाया। उन्होंने जैविकता और परिवार से पारे जाकर परिवार की कल्पना की। बच्चों को अब परिवार के लिए आवश्यक पूर्व शर्त के रूप में नहीं माना गया और पारिवारिक संबंधों ले दायरे में दोस्तों को शामिल किया गया।
2. ओकिन (1989) का मानना है कि परिवार जो कि समाज की आधारभूत संस्था है, में न्याय का स्पष्ट अभाव है। वह विस्तार से बताती हैं कि विवाह और पारंपरिक पारिवारिक संरचना में महिलाओं की निर्भरता, शोषण और

दुर्व्यवहार की संभावना बढ़ जाती है। उनका काम हमें पारंपरिक पारिवारिक संरचनाओं में श्रम के असमान विभाजन पर सवाल उठाते हुए लैंगिक असमानता के बारे में जागरूक करता है, जहाँ महिलाओं को घर सँभालने और बच्चे के पालन–पोषण की गतिविधियों में लगना होता है और पुरुष कमाई का काम करते हैं। इससे पुरुषों पर महिलाओं की आर्थिक निर्भरता बढ़ जाती है और इसलिए, उनमें से कई तलाक से डरती हैं तथा हिंसा और दुर्व्यवहार का शिकार होती हैं।

बोध प्रश्नों के उत्तर 3

1. जैविक परिवार के गठन का आधार रक्त की साझेदारी और विषमलैंगिक मिलन है। इसके विपरीत पसंद के परिवार समलैंगिकों के बीच प्यार और एकजुटता के आधार पर बनते हैं। उनमें प्रजनन गौण रहता है। दूसरा अंतर यह है कि व्यक्ति जैविक परिवार में पैदा होते हैं, इसलिए यह जन्म के समय ही बनता है। पसंद का परिवार तब बनता है जब व्यक्ति बड़ा हो जाता है और अपने भावी परिवार के सदस्यों का चयन करने में सक्षम होता है।
2. नई प्रजनन तकनीकी के आने से प्रजनन और परिवार के विस्तार नए अवसर मिले हैं। सरोगेसी परिवार ऐसे ही अवसर से संभाव हुए परिवार के नए रूप हैं।